शैशवावस्था में विकास (Development During Infancy) :–

भूमिका: शैशवावस्था जन्म होने के बाद मानव विकास की प्रथम अवस्था है। शैशवा-वस्था को जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल माना जाता है। साधारणत: शिशु के जन्म से 5 या 6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था माना जाता है। इस अवस्था को व्यक्ति के विकास की नींव कहा जाता है। अत: इस अवस्था में शिशु के विकास पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना ही अच्छा उसका विकास एवं भावी जीवन होता है।

परिभाषा (Definitions) :– शैशवावस्था को मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया है :–

न्यूमैन के अनुसार :– "पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।"

मनोवैज्ञानिक फ्रायड भी शैशवावस्था को निर्माण काल मानते हैं – "मनुष्य को जो कुछ बनना होता है, वह चार-पाँच वर्षों में बन जाता है।"

एडलर के अनुसार – बालक के जन्म के कुछ माह बाद ही निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है।

" One can determine how a child stands in relation to life a few months after his birth " — Adler.

एडलर के अनुसार :— " जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है। यद्यपि किसी की आयु में परिवर्तन हो सकता है पर प्रवृत्तियाँ और प्रतिमान सदैव बने रहते हैं। "

" During the first two year of life, the child lays the foundation for his future. Although change is possible at age, early trends and patterns tend to persist. "

गुडएनफ के अनुसार - " व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है। "

" One-half of an individuals ultimate Mental Stature has been attained by the age of three Months "

मनोवैज्ञानिकों के इन विचारों के आधार पर यह बात अच्छी तरह से सिद्ध होती है कि शैशवावस्था को जीवन का आधार कहा जा सकता है, जिस पर बालक के भावी जीवन का निर्माण होता है।

Scanned with CamScanner

शैशवावस्था की प्रमुख विशेषताएँ (Chief Characteristics of Infancy)

शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास से सम्बन्धित कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

(1) शारीरिक विकास में तीव्रता (Rapidity in Physical Growth)
(2) मानसिक क्रियाओं में तीव्रता (Rapidity in Mental Processes)
(3) सीखने में तीव्रता (Rapidity in learning)
(4) कल्पना (Imagination)
(5) दोहराने की प्रवृत्ति (Tendency of Repetition)
(6) दूसरों पर निर्भरता (Dependence on others)
(7) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति (Attitude of learning by Imetation)
(8) मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार (Instinctive Behaviour)
(9) संवेगों का प्रदर्शन (Expression of Emotions)
(10) स्वप्रेम की भावना (Feeling of Self love)
(11) नैतिक भावना का अभाव (lack of Moral Feeling)
(12) सामाजिक भावना का विकास (Development of Social Feeling)

MAY JUNE
Scanned with CamScanner

बातों को ध्यान में अवश्य करना चाहिए !—

(1) स्नेहपूर्ण व्यवहार (Affectionate Behaviour)

(2) जिज्ञासा की संतुष्टि (Satisfaction of Curiosity)

(3) वास्तविकता का ज्ञान (Knowledge of Reality)

(4) व्यक्तिगत स्वच्छता की शिक्षा (Education of Individual Cleanliness)

(5) मूल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन (Intiative to Instincts)

(6) पालन पोषण (Nurture)

(7) आत्मनिर्भरता का विकास (Development of Self-dependence)

(8) सामाजिक भावना का विकास (Development of Sociability)

(9) आत्म-प्रदर्शन के लिए अवसर (opportunity for Self-expression)

(10) आत्माभिव्यक्ति के लिए अवसर (opportunity for Self-expression)

Sunday 25

(11) क्रिया तथा खेल द्वारा शिक्षा (Learing by doing and playing)

Scanned with CamScanner

(12) मानसिक क्रियाओं के अवसर (opportunities for Mental Activities)

(13) अच्छी आदतों का निर्माण (formation of Good habits)

(14) व्यक्तिगत विभिन्नता पर ध्यान (Attention on Individual Differences)

(15) संवेगात्मक सुरक्षा (Emotional Security)

Scanned with CamScanner